AKSHARASURYA

Peer-Reviewed, Multi Lingual E-Journal
E-ISSN: 2583-620X
VOLUME – 13, ISSUE – 01, FEBRUARY 2026.

PUBLISHER:

Dr. Mahesh M.
Assistant Professor of Kannada, Christ Academy Institute of Law (CAIL),
Christ Nagar, Hullahalli, Begur - Koppa Road, Sakkalwara Post,
Bangalore - 560 083, Karnataka.
9008559583
m143che@gmail.com
https://aksharasurya.com/

ST.FRANCIS COLLEGE | BENGALURU

Permanently Affiliated to Dr. Manmohan Singh Bengaluru City University

Accredited 'B++' Grade by NAAC I Approved by AICTE

IN ASSOCIATION WITH

People's Research Association (PRA)

Internal Quality Assurance Cell Initiative

National Level
Multilingual Conference-2026

On

EMERGING TRENDS IN LANGUAGE, LITERATURE AND CULTURE

06TH FERUARY 2026

18. Cultural Transformation: An Exploration of Sudha Murty's Portrayal of Tradition and Modernity in Select Non-Fiction **138–146**

~ Vinil Rohan D'Souza & Srinivas Voordi

19. Language, Technology and Artificial Intelligence **147–154**

~ Vinusha J.V. & Sachin B.C.

20. AI-Driven VLSI Chips for Multi-Language Detection, Identification, and Plagiarism Detection **155–160**

~ Venkategowda N.

21. Artificial Intelligence, Social Marketing and Cultural Communication: A Study of Digital Culture in the Current Scenario **161–165**

~ Supriya G.K.

22. Commerce as a driver of language standardization **166–173**

~ Swamy H.E.

23. सुरेंद्र शर्मा कृत 'मुझसे भला न कोय' निबंध संग्रह में व्यंग्य **174-179**

~ प्रिया एस. & पूर्णिमा श्रीनिवासन

24. भाषा-प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता: अवधारणा, अनुप्रयोग, चुनौतियाँ एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य **180-186**

~ शालिनी एम.

25. पर्यावरण साहित्य और हरित चिंतन **187-193**

~ रंजना पिल्लै

26. हिन्दी का प्रचार सोशल मीडिया के साथ **194-199**

~ श्रीललिता

27. भूमंडलीकरण के दौर में आदिवासी जीवन का यथार्थ **200-206**

~ मनोज कुमार

सुरेंद्र शर्मा कृत 'मुझसे भला न कोय' निबंध संग्रह में व्यंग्य

प्रिया एस.[1] & पूर्णिमा श्रीनिवासन[2]

[1]पी.एच.डी. शोधार्थी, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस, टेक्नोलॉजी एवं एडवांस स्टडीज (VISTAS), चेन्नई, तमिलनाडु

[2]शोध निर्देशिका, सहायक आचार्या एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस, टेक्नोलॉजी एवं एडवांस स्टडीज (VISTAS), चेन्नई, तमिलनाडु

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18783944

ABSTRACT:

सुरेंद्र शर्मा का निबंध-संग्रह 'मुझसे भला न कोय' हिंदी व्यंग्य साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस संग्रह में लेखक ने हँसी और व्यंग्य के माध्यम से समाज के भीतर व्याप्त स्वार्थ, नैतिक पतन, और राजनीतिक दिखावे पर तीखी टिप्पणी की है। उनका व्यंग्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और सामाजिक सुधार की दिशा में एक सार्थक पहल है। यह आलेख सुरेंद्र शर्मा की व्यंग्य-दृष्टि, उनकी भाषा-शैली और सामाजिक यथार्थ से उनके जुड़ाव का विश्लेषण करता है। 'मुझसे भला न कोय' के निबंध संग्रह में वे आधुनिक भारतीय समाज की जटिलताओं का सजीव चित्रण करते हैं। इनमें लेखक ने व्यक्ति और व्यवस्था दोनों पर व्यंग्य किया है। विषय चाहे राजनीति हो, शिक्षा, धर्म, या आम जीवन की छोटी-बड़ी घटनाएँ - हर प्रसंग में लेखक ने विसंगतियों को अत्यंत सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। इस संग्रह के निबंधों में लेखक स्वयं को भी व्यंग्य का पात्र बनाते हैं। वह दूसरों पर हँसने के साथ स्वयं पर भी हँसते हैं, जिससे उनकी दृष्टि अधिक ईमानदार और आत्मविश्लेषणात्मक बन जाती है। निबंध का शीर्षक 'मुझसे भला न कोय' स्वयं में ही व्यंग्यात्मक है - यह आधुनिक मनुष्य के अहंकार, आत्ममुग्धता और आत्म-प्रशंसा की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालता है।

KEYWORDS:

व्यंग्य, सुरेंद्र शर्मा, मुझसे भला न कोय, सामाजिक यथार्थ, हास्य, समकालीन समाज, भाषा-शैली, नैतिक चेतना।

प्रस्तावना

21वीं सदी का साहित्य बदलते समय के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी परिदृश्य का सजीव प्रतिबिंब है। अब साहित्य केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि डिजिटल स्क्रीन, ब्लॉग, सोशल मीडिया और ई-पत्रिकाओं के रूप में भी फल-फूल रहा है। साहित्य अब कुछ अभिजात वर्ग तक सीमित न रहकर हर व्यक्ति की पहुँच में आ गया है। आधुनिक लेखक और कवि अब सीधे आम जन की भाषा में उनकी भावनाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को व्यक्त कर रहे हैं। इस सदी का साहित्य न केवल विचारों का, बल्कि सामाजिक चेतना और परिवर्तन का भी माध्यम बन गया है।

हिंदी साहित्य में व्यंग्य वह विधा है जो समाज के अंतर्विरोधों, विसंगतियों और अन्यायों को हँसी और कटाक्ष के माध्यम से उजागर करती है। व्यंग्य का उद्देश्य मात्र हँसाना नहीं होता, बल्कि पाठक को सोचने के लिए विवश करना भी उसका मूल तत्व है। आधुनिक हिंदी व्यंग्यकारों ने समाज की बदलती परिस्थितियों में व्यक्ति और व्यवस्था के बीच बढ़ती दूरी को तीखे शब्दों और सूक्ष्म दृष्टि से सफलतापूर्वक चित्रित किया है।

डॉ. सुरेंद्र शर्मा 21वीं सदी के हिंदी के प्रख्यात कवि, व्यंग्यकार और हास्य साहित्य के जनप्रिय हस्ताक्षर हैं। वे मंचीय कविता से लेकर गद्य लेखन तक हर रूप में सक्रिय हैं। उनकी रचनाओं में भाषा की सहजता, जीवन का व्यावहारिक अनुभव और गहरी सामाजिक समझ झलकती है। उनके हास्य और व्यंग्य समाज की संकीर्ण सोच और पुरानी मान्यताओं को चुनौती देते हैं। 'मुझसे भला न कोय' उनका एक चर्चित निबंध संग्रह है, जिसमें उनकी व्यंग्य दृष्टि अपनी परिपक्वता और गहराई दोनों रूपों में प्रकट होती है।

सुरेंद्र शर्मा का व्यंग्य दृष्टिकोण

सुरेंद्र शर्मा अपने व्यंग्य में 'हँसी' को हथियार के रूप में नहीं, बल्कि 'दर्पण' के रूप में प्रयोग करते हैं। उनकी लेखनी में न तो क्रोध है और न ही कटुता; बल्कि एक ऐसी कोमल करुणा है जो पाठक को सोचने पर मजबूर कर देती है। सुप्रसिद्ध कवि 'भारत भूषण' ने 'काश! कोई मेरी तरह पढ़े' में उक्त निबंध संग्रह के बारे में व्यक्त किया है कि- "सूत्रात्मक, स्मरणशक्ति की व्यापकता, प्रत्युत्पन्नमति, निर्भीकता, व्यंग्य के प्रयोग और वाक्यों का गठन; सभी कुछ है। इतनी करुणा तो सही भी नहीं

जाती। सभी कुछ करुण ही करुण है, काश कोई मेरी तरह पढ़े।"[1] वे समाज के उन पहलुओं को उजागर करते हैं, जिन पर हम अक्सर ध्यान नहीं देते। उनका व्यंग्य किसी व्यक्ति विशेष पर नहीं, बल्कि उस सोच पर प्रहार करता है जो हमारी सामाजिक संरचना को खोखला बना रही है। शर्मा जी के लेखन में आम आदमी की पीड़ा जैसे - "जुबान का इतिहास रहा है कि जब-जब कोई जुबान सत्य बोली तो वह खींच ली गई और जब-जब कोई जुबान पलटी तो पूज ली गई।"[2]; राजनीतिक दिखावे जैसे - "कोई अपना काम नहीं कर रहा। ---- जिसे देखो, वह दूसरे मंत्रालय में अपनी टांग अड़ा रहा है। विरोधी पक्ष वाले विरोध नहीं कर पा रहे। सत्ता पक्ष वाले आपस में एक-दूसरे का विरोध करने पर तुले हुए हैं। पुरुष कान में बालियाँ पहनकर घूम रहा है और महिलाएँ भार उठाने में पदक जीत रही हैं। कोई भी तो अपना काम नहीं कर रहा।"[3]; नैतिक पतन जैसे - "पहले लोग गलत काम करने के लिए भ्रष्टाचार का रास्ता अपनाते थे और उनका काम हो जाता था। इसे भ्रष्टाचार कहते थे। अब लोगों को सही काम के लिए भी भ्रष्टाचार अपनाना पड़ता है और फिर भी उनका काम नहीं हो पाता है। इसे भ्रष्टाचार को भ्रष्ट करना कहते हैं।"[4] और शिक्षा व्यवस्था की खामियाँ जैसे - "अधिकांश तो यही हुआ है कि अनपढ़ लोगों ने कविताएँ लिखीं और पढ़े-लिखों ने उन पर पीएच.डी. की। इस देश के तमाम अनपढ़ कवियों को साहित्य से निकाल दिया जाए तो पूरा देश साहित्य की पीएचडीयों से मुक्त हो जाएगा।"[5] बार-बार सामने आती हैं। वे जानते हैं कि सीधे उपदेश से समाज नहीं बदलता, लेकिन व्यंग्य के माध्यम से वे ऐसी चोट करते हैं जो हँसाते हुए भी भीतर तक असर करती है। वे व्यंग्य को समाज की 'भीतरी सफाई' का औजार मानते हैं।

'मुझसे भला न कोय' का शीर्षक और अर्थ

इस निबंध-संग्रह का शीर्षक ही लेखक के आत्म-संवाद का प्रतीक है। 'मुझसे भला न कोय' कथन में आत्मप्रशंसा और आत्म-आलोचना, दोनों के स्वर एक साथ सुनाई देते हैं। जैसे यहाँ लेखक अपने सपने में आए भगवान से अपनी बुद्धिमानी का प्रदर्शन करते हुए कहते हैं कि -"आप कुछ मत कीजिए, मेहरबानी करके मेरे सपने से बाहर जाइए। अच्छा-खासा आपके आने से पहले अपनी प्रेमिका के साथ घूम रहा था। एक तो बीच में आकर टांग अड़ाई और जब देने का नंबर आया तो देना तो दूर, मेरे प्राणों के पीछे पड़ गए। यह तो मैं सीधा-साधा व्यक्ति हूँ। कोई ऋषि-मुनि होता तो इसी बात पर शाप दे देता!"[6] लेखक स्वयं को समाज के

दर्पण के रूप में प्रस्तुत करते हैं - जहाँ हर व्यक्ति खुद को सही मानता है, परंतु अपने आचरण पर विचार नहीं करता। संग्रह के निबंधों में भाषा अत्यंत सरल, चुटीली और संवादधर्मी है। हास्य के पीछे गहरी संवेदनशीलता छिपी है। वे छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से समाज की बड़ी सच्चाइयों को सामने लाते हैं - जैसे सरकारी तंत्र की लापरवाही, राजनीति में नैतिकता की कमी, या आम जनमानस की स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति।

सामाजिक यथार्थ और व्यंग्य की भूमिका

शर्मा जी का व्यंग्य अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। वे समाज के उस वर्ग को केंद्र में रखते हैं जो अपनी सुविधाओं में इतना उलझ गया है कि दूसरों की समस्याएँ उसे मजाक लगती हैं। दुनिया भर को गंदगी दिखाने वाले को खुद अपनी गंदगी नहीं दिखती। उनके शब्दों में - "हुजूर, दूसरों को सुधारने के लिए तो सब लोग मसीहा हो जाते हैं, लेकिन स्वयं की बात आती है तो मजबूर हो जाते हैं। संसार को जीतनेवाला योद्धा ही स्वयं से हार जाता है। --- अब मेरी समझ में आया इस देश की तबाही का रहस्य कि हमने समुद्र-मंथन तो कर लिया, पर आत्म-मंथन कभी भी नहीं किया।"[7]

जब समाज अन्याय के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाता, तब व्यंग्य उस मौन को तोड़ने का कार्य करता है।

भाषा, शैली और शिल्प

सुरेंद्र शर्मा की भाषा उनके व्यंग्य की सबसे बड़ी शक्ति है। वे आम बोलचाल की भाषा में गहरी बात कहने का हुनर जानते हैं। उनकी शैली में मुहावरों, कहावतों और लोकप्रचलित वाक्यों का सहज प्रयोग मिलता है, जिससे पाठक को यह महसूस होता है कि लेखक उसी की भाषा बोल रहा है। उनके वाक्य छोटे, धारदार और लयात्मक होते हैं। वे एक ही वाक्य में हास्य और कटाक्ष दोनों पैदा कर देते हैं। उनके व्यंग्य की भाषा में संवाद का रूप प्रमुख है - मानो लेखक पाठक से सीधे बात कर रहा हो। इससे उनके निबंधों में जीवंतता आ जाती है। जैसे- "मेरी बुद्धिमानी का अश्वमेघ का घोड़ा पूरे संसार में बेरोक-टोक घूमता है, दौड़ता है। किसी की हिम्मत नहीं कि इसकी लगाम थाम सके। लेकिन पता नहीं क्यों, घर में घुसते ही इस घोड़े की हिम्मत जवाब दे जाती है और यह टस से मस नहीं हो पाता है। मैं जितनी अक्लमंदी से बाहर से पैसा कमाकर लाता हूँ, उससे कहीं ज्यादा मुझे मूर्ख बनाकर वह पैसा मुझसे लूट लिया जाता

है।"[8]

व्यक्ति और समाज का द्वंद्व

'मुझसे भला न कोय' में लेखक व्यक्ति और समाज के बीच चल रहे अंतर्विरोध को बखूबी उजागर करते हैं। हर व्यक्ति खुद को सबसे श्रेष्ठ मानता है, परंतु जब वही व्यक्ति समाज का हिस्सा बनता है, तो उसकी नैतिकता बदल जाती है। लेखक इसी आत्म-विरोधाभास को व्यंग्य के माध्यम से सामने लाते हैं। इस सच्चाई को वे श्रीराम के माध्यम से उजागर करते हैं जैसे - "कहा जाता है कि तुम्हारे द्वारा मारे जाने पर रावण मोक्ष को प्राप्त हुआ, पर ये कैसा मोक्ष है कि हर बार उसे जलाया जा रहा है! तुमने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को शिक्षा लेने के लिए रावण के पास भेजा था। वजह यही थी ना कि तुम भी ये मानते थे कि रावण के अंदर एक चरित्र है। कितनी अधूरी लगती हैं ये सारी रामलीलाएँ? ये आपके चरित्र को तो उजागर करती हैं, पर यह उजागर नहीं करती कि राम ने रावण में भी चरित्र देखा था।"[9] वे दिखाते हैं कि कैसे हम दूसरों की गलतियों पर तो तुरंत हँसते हैं, लेकिन अपनी गलतियों पर मौन हो जाते हैं। यह द्वंद्व उनके व्यंग्य को और अधिक गहराई देता है, क्योंकि यह रचना न सिर्फ समाज की सच्चाइयों को उजागर करती है, बल्कि मानव मन की गहराइयों को भी प्रभावित करती है।

समकालीन महत्व

आज जब राजनीति, मीडिया और समाज के हर क्षेत्र में दिखावा और स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ रही है, सुरेंद्र शर्मा का व्यंग्य पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। उनके अनुसार "राजनीति में आए हो तो पूरे मन से रहो, आधे-अधूरे मन से न राजनीति ही की जा सकती है, न संन्यास ही ग्रहण किया जा सकता है। राजनीति का काम ईमानदारी से करें। ये किसी तपस्या से कम नहीं है। आँसुओं पर लिखी गई सौ कविताएँ छोटी पड़ जाती हैं, अगर आप किसी के आँसू पोंछ दें।"[10] उनके निबंधों में जो व्यंग्यात्मक दृष्टि है, वह आज के दौर में भी उतनी ही असरदार है। वे यह याद दिलाते हैं कि व्यंग्य केवल आलोचना नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का अवसर है। 'मुझसे भला न कोय' हमें यह सिखाता है कि हँसी के पीछे छिपे सत्य को समझना उतना ही आवश्यक है जितना किसी गंभीर भाषण को सुनना। व्यंग्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सुधार की दिशा में चेतना जगाना है।

निष्कर्ष

'मुझसे भला न कोय' निबंध-संग्रह में सुरेंद्र शर्मा ने व्यंग्य को एक सामाजिक और नैतिक विमर्श के स्तर तक पहुँचा दिया है। उनके लेखन में हास्य के पीछे एक करुणा है, और व्यंग्य के पीछे एक गहरी संवेदनशीलता। वे पाठक को हँसाते भी हैं और उसी हँसी के भीतर आत्मनिरीक्षण के बीज भी बो देते हैं। यह संग्रह हमें यह सिखाता है कि यदि हम अपने आचरण पर नहीं हँसेंगे, तो समाज की विसंगतियाँ कभी समाप्त नहीं होंगी। सुरेंद्र शर्मा का यह लेखन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी एक चेतावनी और प्रेरणा दोनों प्रदान करता है।

अंत्यटीप

1. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - काश! कोई मेरी तरह पढ़े - पृ.सं. - 12
2. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - जुबान पलटने के लिए बनी है - पृ.सं. - 190
3. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - कोई अपना काम नहीं कर रहा - पृ.सं. - 82
4. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - भ्रष्टाचार ही भगवान है - पृ.सं. - 70
5. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - एक महान व्यक्ति यानि मैं - पृ.सं. - 35
6. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - सुख का मूल मंत्र - पृ.सं. - 66
7. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - आत्म मंथन - पृ.सं. - 107
8. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - पाने की लालच में क्या नहीं खोते हम - पृ.सं. - 93
9. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - काश! रावण-राज्य ही आ जाए - पृ.सं. - 68
10. मुझसे भला न कोय - सुरेन्द्र शर्मा - मेरा मन अनत कहाँ सुख पावै - पृ.सं. - 74

संदर्भ सूची

1. सुरेंद्र शर्मा, 'मुझसे भला न कोय', अव्यक्त प्रकाशन, 2020